# कोयल की चालाकी से बचाव के उपाय

कोयल दूसरे पक्षियों के घोंसलों में अंडे देने के लिए बदनाम है। मगर ये अन्य पक्षी, जो अनजाने में कोयल के अंडों के मेज़बान बनते हैं, भी पीछे नहीं हैं। हाल के एक अध्ययन से पता चला है कि इन पक्षियों में अपने अंडों की पहचान के लिए कुछ उपाय विकसित हुए हैं हालांकि अभी पता नहीं है कि ये उपाय कितने कारगर और कामयाब हैं।

कोयल (*कुकुलस केनोरस*) ऐसे अंडे देने में सक्षम है जो किसी मेज़बान पक्षी के अंडों जैसे दिखें। और तो और, कोयल के अंडे मेज़बान पक्षी के अंडों से पहले फूटते हैं और इनमें से निकले चूज़े मेज़बान पक्षी के अंडों या चूज़ों को बाहर गिरा देते हैं। परिणाम यह होता है कि मेज़बान पक्षी कोयल के चूज़ों को अपना समझकर दाना देते रहते हैं।

इन घुसपैठियों से बचने के लिए मेज़बान पक्षियों को करना यह होगा कि फूटने से पहले इन अंडों को पहचानकर अपने घोंसले से बाहर कर दें। *नेचर कम्यूनिकेशन्स* में प्रकाशित एक शोध पत्र से तो लगता है कि मेज़बान पक्षी इसका प्रयास करते भी हैं। हारवर्ड विश्वविद्यालय की जीव वैज्ञानिक मैरी केसवेल स्टोडार्ड ने कंप्यूटर की मदद से एक अध्ययन करके बताया है कि मेज़बान पक्षियों के अंडों पर ऐसे पैटर्न विकसित हुए हैं जिनके आधार पर वे अपने अंडों को पहचान सकते हैं।

स्टोडार्ड और उनके साथियों ने लंदन के प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय से 689 अंडों की तस्वीरें खींची। ये अंडे उन पक्षी प्रजातियों के थे जिनके घोंसलों में कोयल अंडे देती है। तस्वीरें एक ऐसे कैमरे से खींची गई थीं जो उस प्रकाश को पकड़ता है जिसे पक्षी देख पाते हैं। अर्थात ये तस्वीरें बताती हैं कि ये अंडे पक्षियों को कैसे दिखते होंगे।

अब शोधकर्ता यह देखना चाहते थे कि पक्षी इन अंडों पर बने चितकबरे पैटर्न को कैसे देखते-समझते होंगे। इसके लिए एक पैटर्न पहचान सूत्र विकसित किया गया जिसे *नेचरपैटर्नमैच* कहते हैं। जब एक-एक प्रजाति के अंडों के पैटर्न का अध्ययन किया गया तो काफी विविधता सामने आई। सबसे प्रमुख निष्कर्ष तो यह था कि अधिकांश मेज़बान प्रजातियों में अंडों पर विशिष्ट 'सिग्नेचर पैटर्न' थे। यह भी देखा गया कि कोयल जिन पक्षियों के घोसलों का ज़्यादा शोषण करती हैं, उनके अंडों के पैटर्न कहीं ज़्यादा जटिल थे। कुछ प्रजातियों में एक ही मादा के सारे अंडों में एक-सा पैटर्न था जबकि कुछ पक्षियों में एक ही मादा द्वारा अलग-अलग समय पर दिए गए अंडों के पैटर्न अलग-अलग थे।

शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि मेज़बान पक्षी पूरी कोशिश करते हैं कि कोयल उनका शोषण न कर पाए। मगर तथ्य यह है कि कोयल फिर भी करतब दिखा जाती है। इसलिए कई वैज्ञानिकों को लगता है कि यह अध्ययन अभी भी इस मान्यता पर टिका है कि कंप्यूटर वही देख रहा है जो पक्षी देखते हैं। यह मान्यता कितनी सच के करीब है यह प्रमाणित नहीं हुआ है। फिर लगता है कि स्टोडार्ड ने एक तकनीक विकसित की है जिसमें और परिष्कार करके विहंगमदृष्टि के बारे में और प्रयोग किए जा सकेंगे।

***(स्रोत फीचर्स)***